Tara Sadhana तारा-साधना

भगवती तारा मां काली का ही स्वरूप है। मां काली को नीलरूपा होने के कारण ही तारा कहा गया है। भगवती काली का यह स्वरूप सर्वदा मोक्ष देने वाला है, जीव को इस संसार सागर से तारने वाला है- इसलिए वह तारा हैं। सहज में ही वे वाक् प्रदान करने वाली हैं इसलिए नीलसरस्वती हैं। भयंकर विपत्तियों से साधक की रक्षा करती हैं, उसे अपनी कृपा प्रदान करती हैं, इसलिए वे उग्रतारा या उग्रतारिणी हैं।

यद्यपि मां तारा और काली में कोई भेद नहीं है, तथापि बृहन्नील तंत्रादि ग्रंथों में उनके विशिष्ट स्वरूप का उल्लेख किया गया है। हयग्रीव दानव का वध करने के लिए देवी को नील-विग्रह प्राप्त हुआ, जिस कारण वे तारा कहलाईं। शव-रूप शिव पर प्रत्यालीढ मुद्रा में भगवती आरूढ हैं, और उनकी नीले रंग की

आकृति है तथा नील कमलों के समान तीन नेत्र तथा हाथों में कैंची, कपाल, कमल और खडग धारण किये हैं। व्याघ्र-चर्म से विभूषित इन देवी के कंठ में मुण्डमाला लहराती है। वे उग्र तारा हैं, लेकिन अपने भक्तों पर कृपा करने के लिए उनकी तत्परता अमोघ है । इस कारण मां तारा महा-करूणामयी हैं।

तारा तंत्र में कहा गया है-

समुद्र मथने देवि कालकूट समुपस्थितम् ।।

समुद्र मंथन के समय जब कालकूट विष निकला तो बिना किसी क्षोभ के उस हलाहल विष को पीने वाले भगवान शिव ही अक्षोभ्य हैं और उनके साथ तारा विराजमान हैं। शिवशक्ति संगम तंत्र में अक्षोभ्य शब्द का अर्थ महादेव कहा गया है। अक्षोभ्य को दृष्टा ऋषि शिव कहा गया है। अक्षोभ्य शिव ऋषि को मस्तक पर धारण करने वाली तारा तारिणी अर्थात् तारण करने वाली हैं। उनके मस्तक पर स्थित पिंगल वर्ण उग्र जटा का भी अद्भूत रहस्य है। ये फैली हुई उग्र पीली जटाएं सूर्य की किरणों की प्रतिरूपा हैं। यह एकजटा है। इस प्रकार अक्षोभ्य एवं पिंगोग्रैक जटा धारिणी उग्र तारा एकजटा के रूप में पूजी जाती हैं। वे ही उग्र तारा शव के हृदय पर चरण रखकर उस शव को शिव बना देने वाली नील सरस्वती हो जाती हैं।

सर्वप्रथम महर्षि वशिष्ट ने भगवती तारा की वैदिक रीति से आराधना की, परंतु वे सफल नहीं हुए। तब उन्हें उनके पिता ब्रह्मा जी से संकेत मिला कि वे तांत्रिक पद्धति से भगवती तारा की उपासना करें तो वे निश्चय ही सफल होंगें। उस समय केवल भगवान बुद्ध ही इस विद्या के आचार्य माने जाते थे। अतः महर्षि वशिष्ठ चीन देश में निवास कर रहे भगवान बुद्ध के पास पंहुचे, जिन्होंने महर्षि को चीनाचार पद्धति का उपदेश दिया। तदोपरान्त ही वशिष्ठ जी को भगवती तारा की सिद्धि प्राप्त हुई।

इसी कारण कहा जाता है कि भगवती तारा की उपासना तांत्रिक पद्धति से ही सफल होती है।

महाकाल-संहिता के कामकला-खण्ड में तारा-रहस्य वर्णित है, जिसमें तारा-रात्रि में भगवती तारा की उपासनाका विशेष महत्व है। चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि की रात्रि को तारा-रात्रि कहा जाता है।

बिहार प्रदेश के सहरसा जनपद में प्रसिद्ध 'महिषि'ग्राम में भगवती उग्रतारा की सिद्धपीठ स्थित है। इस पवित्र स्थान में मां तारा, एकजटा एवं नीलसरस्वती

की त्रिमूर्तियां एक साथ स्थापित है। वंहा मध्य में बड़ी प्रतिमा तथा उसके दोनों ओर छोटी प्रतिमाएं स्थापित है। किवदंति के अनुसार यही वह स्थल है, जंहा महर्षि वशिष्ठ ने मां तारा की उपासना करके सिद्धि प्राप्त की थी। वास्तव में भगवती तारा का रहस्य अत्यन्त ही चमत्कारपूर्ण है।

मेरी यह मां सर्वमयी, नूतन जलधर स्वरूपा लम्बोदरी हैं। उन्होंने अपने कटि प्रदेश में व्याघ्र चर्म लपेटा हुआ है, उनके स्तन स्थूल एवं समुन्नत कुच वाले हैं, उनके तीनों नेत्र लाल-लाल और वृताकार हैं, उनकी पीठ पर अत्यंत घोर घने काले केश फैले हुए हैं, उनका सिर अक्षोभ्य महादेव के प्रिय नाग के फनों से सुशोभित है, उनकी दोनों बगलों में नील कमलों की मालाएं शोभित हो रही हैं, ऐसी मां तारा का मैं ध्यान करता हूं।

पंचमुद्रा-स्वरूपिणि, शुभ्र त्रिकोणाकार कगल पंचक को धारण करने वाली, अत्यंत नील जटाजूट वाली, विशाल चंवर मुद्रा रूपी केशों से अलंकृत, श्वेतवर्ण के तक्षक नाग के वलय वाली, रक्त वर्ण सर्प के समान अल्पाहार वाली, विचित्र वर्णों वाले शेषनाग से बने हार को धारण करने वाली, सुनहले पीतवर्ण के छोटे-छोटे सर्पों की मुद्रिकाएं धारण करने वाली, हल्के लाल रंग के नाग की बनी कटिसूत्र वाली, दूर्वादल के समान श्यामवर्ण के नागों के वलय वाली, सूर्य, चन्द्र, अग्निस्वरूप, त्रिनयना, करोड़ो बाल रवि की छवियुक्त दक्षिण नेत्र वाली, कोटि-कोटि बालचन्द्र के समान शीतल नयनों वाली, लाखों अग्निशिखाओं से भी तीक्ष्ण तेजोरूप नयनों वाली, लपलपाती जिह्वा वाली, महाकाल रूपी शव के हृदय पर दायें पद को कुछ मुड़ी हुई मुद्रा में एवं उसके दोनों पैरों पर अपने बायें पैर को फैली हुई अवस्था में उस प्रत्यालीढ़ पद वाली महाकाली का हम ध्यान करते हैं, जो तुरन्त ही कटे हुए रूधिराक्त केशों से गूंथे गये मुण्डमालों से अत्यन्त रमणीय हो गयी हैं। समस्त प्रकार के स्त्री-आभूषणों से विभूषित एवं महामोह को भी मोहने वाली हैं, महामुक्ति दायिनि, विपरीत रतिक्रीड़ा, निरता एवं रति कामावेश के कारण आनन्दमुखी है।

भगवती तारा का ध्यान अपने कर्म या लक्ष्य के अनुसार किया जाता है। सर्व प्रथम मैं उनके सात्विक ध्यान का उल्लेख कर रहा हूं जिसे सृष्टि ध्यान भी कहा जाता है

सात्विक ध्यान

श्वेताम्बराढ्यां हंसस्थां मुक्ताभरणभूषिताम्।
चतुर्वक्त्रामष्टभुजैर्दधानां कुण्डिकाम्बुजे ।।
वराभये पाशशक्ती अक्षस्रक्पुष्पमालिके ।
शब्दपाथोनिधौ ध्यायेत् सृष्टिध्यानमुदीरितम् ।।

अर्थात् -

सफेद वस्त्र धारण किये हुए, हंस पर विराजित, मोती के आभूषणों से अलंकृत, चार मुखों वाली तथा अपनी आठ भुजाओं में क्रमशः कमण्डल, कमल, वर, अभय मुद्रा, पाश, शक्ति, अक्षमाला एवं पुष्पमाला धारण किये हुए शब्द समुद्र में स्थित महाविद्या का ध्यान करें ।

भगवती का राजस ध्यान, जिसे स्थिति ध्यान भी कहा जाता है, निम्नवत् हैः-

राजसी ध्यान

रक्ताम्बरां रक्तसिंहासनस्थां हेमभूषिताम्।
एकवक्त्रां वेदसंख्यैर्भुजैः संबिभ्रतीं क्रमात् ।।
अक्षमालां पानपात्रम-भयं वरमुत्तमम् ।
श्वेतद्वीपस्थितां ध्यायेत् स्थितिध्यानमिदं स्मृतम्।।

अर्थात् -

रक्त वर्ण के वस्त्र धारण किये हुए, रक्त वर्ण के सिंहासन पर विराजित, सुवर्ण से बने आभूषणों से सुशोभित, एक मुख वाली, अपनी चार भुजाओं में अक्षमाला, पानपात्र, अभय एवं वर मुद्रा धारण किये हुए श्वेतद्वीप निवासिनी भगवती का ध्यान करें।

इसके अतिरिक्त भगवती तारा का तामस ध्यान भी है, जिसे संहार ध्यान कहा जाता है, वह निम्नवत् हैः-

तामस ध्यान

कृष्णाम्बराढ्यां नौसंस्थामस्थ्याभरण-भूषिताम् ।
नववक्त्रां भुजैरष्टादशभिर्दधतीं वरम्।।

अभयं परशुं दर्वीं खड्गं पाशुपतं हलम् ।
भिण्डिं शूलं च मुसलं कर्त्रीं शक्तिं त्रिशीर्षकम् ।।
अर्थात् -

काले रंग का वस्त्र धारण किये हुए, नौका पर विराजित, हड्डी के आभूषणों से विभूषित, नौ मुखों वाली, अपनी अट्ठारह भुजाओं में वर, अभय, परशु, दर्वी, खड्ग, पाशुपत, हल, भिण्डि, शूल, मूशल, कैंची, शक्ति, त्रिशूल, संहार अस्त्र, पाश, वज्र, खट्वांग और गदा धारण करने वाली रक्त-सागर में स्थित देवी का ध्यान करना चाहिए।

भगवती तारा के साधक को क्रूर कर्मों में संहार ध्यान, उच्चाटन एवं वशीकरण कर्मों में स्थिति ध्यान तथा पौष्टिक एवं शांति आदि कर्मों में सृष्टि ध्यान करना चाहिए।

तारावर्ण के अनुसार ऋषि वशिष्ठ ने लम्बे समय तक भगवती तारा की उपासना की, लेकिन उन्हें सिद्धि नहीं प्राप्त हुई । अन्त में उन्होंने क्रोधित होकर देवी को शाप दे दिया, परिणामतः यह विद्या फल प्रदान करने में असमर्थ हो गयी ।

कुछ समय पश्चात क्रोध शांत होने पर ऋषि ने इसका शापोद्धार प्राप्त किया। शापोद्धार करते समय ताराबीज 'त्रीं ' में स-कार का योग करने से इसका शाप दूर हो जाता है। तभी से यह विद्या वधू के समान यशस्विनि हो गयी और भगवती तारा का यह बीज ' त्रीं ' वधू बीज कहलाने लगा।

भगवती तारा के भिन्न -भिन्न नाम हैं। उन्हें एकजटा तारा, उग्रतारा, नीलसरस्वती तारा के रूप में जाना जाता है। यंहा मैं उनके पंचाक्षर मंत्र का विधान स्पष्ट कर रहा हूँ।

विनियोग :- ॐ अस्य श्री तारा मंत्रस्य अक्षोभ्य ऋषिः, बृहती छन्दः, तारा देवता, ह्रीं बींज, हुं शक्तिः आत्मनोऽभिष्ट सिद्धयर्थं तारामंत्र जपे विनियोगः।

यंहा यह भी स्मरणीय है कि भगवती तारा उग्र विपत्ति से साधक का उद्धार करती हैं, इसीलिए उन्हें उग्रतारा कहा जाता है। अतः इस प्रकार के प्रयोग करते समय जब विनियोग करें तो ' हुं ' बीज तथा 'फट ' शक्ति का प्रयोग करें । उस समय ह्रीं बीज, हुं शक्ति का प्रयोग नहीं करना चाहिए। इससे

राजद्वार, राजसभा, राजकार्य, विवाद, संग्राम एवं द्यूत आदि कार्यों में साधक को निश्चय ही विजय प्राप्ति होती है।

ऋष्यादिन्यासः- ॐ अक्षोभ्य ऋषये नमः शिरसि ।

ॐ बृहती छन्दसे नमः मुखे ।

ॐ तारादेवतायै नमः हृदि ।

ॐ ह्रीं (हूं) बीजाय नमः गुह्ये।

ॐ हूं(फट्) शक्तये नमः पादयोः।

ॐ स्त्रीं कीलकाय नमः सर्वांगे ।

करांगन्यास :-

ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ।

ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः ।

ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।

ॐ ह्रः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः ।

करांगन्यास के समान ही हृदयादि न्यास करें।

मंत्र : ॐ ह्रीं स्त्रीं हुं फट् । (भगवती तारा का यह पंचाक्षरी मंत्र है।)

About The Author

Name :- Shri Yogeshwaranand Ji
Mb :- +919917325788, +919675778193
Email ;- shaktisadhna@yahoo.com
Web : www.anusthanokarehasya.com

MY DEAR READERS! VERY SOON I AM GOING TO START AN E-MAIL BASED MONTHLY MAGAZINE RELATED TO TANTRAS, MANTRAS AND YANTRAS INCLUDING PRACTICAL USES FOR HUMAN WELFARE. I REQUEST YOU TO APPRECIATE ME, SO THAT I CAN CHANGE MY DREAMS INTO REALITY REGARDING THE SERVICE OF HUMANITY THROUGH BLESSINGS OF OUR SAINTS AND THROUGH THE GRACE OF MA PITAMBARA. PLEASE MAKE REGISTERED TO YOURSELF AND YOUR FRIENDS. FOR REGISTRATION EMAIL ME AT SHAKTISADHNA@YAHOO.COM. THANKS

Some Of the Books Written By Shri Yogeshwarnand Ji

For Purchasing Books Contact 9410030994

1. Baglamukhi Sadhana Aur Siddhi
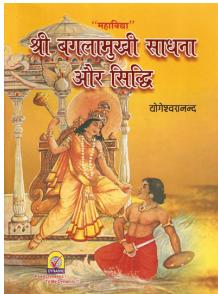
2. Mantra Sadhana

3. Shodashi Mahavidya